गोनू झा के किस्से (भाग-1)

ज़ेब में रसगुल्ले

विभा रानी

गोनू झा के किस्से

(भाग-1)

ज़ेब में रसगुल्ले

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2024

© विभा रानी

आवरण डिजाइन : कोशी ब्रह्मात्मज

गोनू झा के किस्से और उनकी प्रासंगिकता

मिथिला की लोक कला, चित्रकला, विद्यापति, स्नेहलता, यहाँ का खान- पान मिथिला को विशिष्ट बनाते हैं। गोनू झा इनमें से एक हैं। ये विद्यापति के समकालीन माने जाते हैं। दोनों ही चौदहवीं शताब्दी में हुए थे। साहित्यकार-सह-भारतीय प्राचीन इतिहासविद उषाकिरण खान अपनी चित्रकथा पुस्तक 'ऐसे थे गोनू झा' में लिखती हैं- 'गोनू झा और विद्यापति एक ही समय के थे।' कथाकार, नाटककार कुणाल के शब्दों में 'यह एक निर्विवाद सत्य है कि गोनू झा एक जीता- जागता व्यक्तित्व थे। चौदहवीं शताब्दी में जब मिथिला पर भवसिंह नामक राजा राज्य करते थे, गोनू झा का आविर्भाव दरभंगा जिले के भरौरा (भड़वारा) नामक गाँव में हुआ था।' मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित पंजी के अनुसार 'गोनू झा संस्कृत के विद्वान तथा महोपाध्याय की उपाधि से विभूषित थे।'

गोनू झा आज एक मुहावरा बन चुके हैं। इनको आफंती, तेनालीराम, बीरबल, गोपाल भांड आदि के साथ रखा जा सकता है। सभी में एक मिलता- जुलता गुण है कि ये सभी बहुत गुणी, हाजिरजवाब, बुद्धिमान और प्रत्युतपन्नमति वाले थे। इसलिए, आज इन सबकी कहानियों का एक- दूसरे के साथ गड्ड-मड्ड हो जाना बहुत स्वाभाविक सा हो गया है।

फिर भी, गोनू झा की अपनी स्थानीयता उन्हें मिथिला समाज में विशिष्ट बनाती है। लोक आस्था, लोक विश्वास और लोक कथन अपनी स्थिति के साथ आते रहते हैं। हम जानते हैं कि लोक कथाओं की अपनी गति है। जब- जब शास्त्र या विद्या लोक पर भारी पड़ती है, लोग अपना साहित्य गढ़ लेते हैं। हम हर समय एक यंग एंग्री मैन या एक आदर्श व्यक्तित्व की खोज में लगे रहते हैं, चाहे वह राम हों या फिल्मों के अमिताभ बच्चन या हास्य व्यंग्य में तेनालीराम या गोनू झा।

यहाँ आप सबके सामने गोनू झा के कुछ किस्सों को आपके सामने लाने के पीछे मेरा इरादा है कि आप मिथिला की इन विभूति को उसी तरह जानें, पहचानें, जिस तरह से आप बीरबल, तेनाली राम, आफंती या मुल्ला नसीरुद्दीन को जानते- पढ़ते- समझते आए हैं।

हमारा दुर्भाग्य कि अभी तक गोनू झा को एक समाज चेता, एक विद्वान, एक व्यंग्य बोधक के रूप में नहीं देखा गया है। उनकी बुद्धिमत्ता और समस्याओं को साम- दाम से सुलझाने की विशेषता के कारण कुछ तथाकथित पंडितों ने उन्हें धूर्त शिरोमणि की उपाधि दे दी। मैथिली के सुप्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, कवि, नाटककार बिभूति आनंद लिखते हैं- ‘गोनू झा की अत्यधिक अवमानना की गई और तत्कालीन पंडित समाज द्वारा 'पंजी' को सदा-सर्वदा के लिए नीति निर्देशक मानकर उनके नाम के आगे 'महो धूर्त्तराज' शब्द टीप दिया गया।... पंडित-जन उन्हें अगंभीर बूझते रहे, आम-जन उसी तरह उन्हें अपना कंठहार बनाकर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक एकदम सहज रूप से अग्रसारित करता रहा।’

पहले ग्रामीण रंगमंचों पर नाटक नहीं जम पाते थे। इसलिए, बीच- बीच में गोनू झा के किस्से प्रहसन के रूप में अभिनीत होते थे। इसी के बल पर नाटक भी लोग देख लेते थे। इसी तरह रात में बच्चों को सुलाते समय दादी-नानी गोनू झा के किस्से सुनाती थीं। बिभूति आनंद लिखते हैं- 'गोनू झा के किस्सों को पढ़ते हुए बोध हुआ कि वे मात्र हास्यरसावतार भर ही नहीं, शीर्ष समाज-चेता महापुरुष भी थे। हँसी की तह में वे तत्कालीन समाज की कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा अंधविश्वास आदि पर सहज रूप से अपनी उंगली रखते हैं।'

गोनू झा जैसे व्यक्तित्व समय से परे हो चुके होते हैं। समय है, उनके कामों को देखने, समझने और उसे नाना विध उपयोग में लाने का ताकि हम भी उन्हें कुछ जान- समझ सकें और अपनी अगली पीढ़ी तक उसे पहुंचा सकें।

गोनू झा के बहुत सारे किस्से अभी भी मौखिक स्टेज में ही हैं। मेरी कोशिश है कि जितना मैंने बचपन में सुना है, या अभी भी सुन रही हूँ, आप सबके सामने लाऊं। इसी क्रम में दो कथाएँ मुझे पेंडेमिक के दौरान ऑन- लाइन थिएटर क्लास लेते समय अपनी दो छुटकी छात्राओं, कोंपल भारद्वाज और श्रीनिधि मिश्रा से मिलीं। एक कथा बन्दना दत्त ने मैथिली में भेजी। उन सबके और नॉटनल के प्रति आभार।

विभा रानी

मुंबई

सूची

मछली और चोर	6
ज़ेब में रसगुल्ले	12
सोना और घुन	18
घी का कनस्तर	23
राख की रस्सी	26
वारिस	29
नहले पर दहला	32
शक्तिशाली कौन?	36
मेरा तल्ला, मेरा मन!	37
पैसा और न्याय	40
सोने की खेती	42
कपड़े का रंग	46
आम के दाम	49
पगार	52
खुशबू और खनखन	55

मछली और चोर

एक बार गोनू झा नदी किनारे टहल रहे थे। उन्होंने देखा कि मल्लाह ने जाल फैलाया है मछली पकड़ने के लिए। मल्लाहों ने उस दिन ढेर सारी मछलियाँ पकड़ी थीं। कुछ तो काफी बड़ी थीं। बड़ी और ताजा मछलियां देख गोनू झा बड़े खुश हुए। उन्होंने उसमें से सबसे बड़ी रोहू मछली चुनकर ले ली और खूब खुशी से घर की ओर विदा हुए। घर पहुंचकर पत्नी को आवाज दी- 'देखो, कितनी बड़ी और ताजा मछली मैं तुम्हारे लिए लेकर आया हूं।'

मछली देखकर गोनू झा की पत्नी भी प्रसन्न हो गई। उन्होंने गोनू झा से कहा कि 'वह सरसों का मसाला देकर मछली बनाएगी।' गोनू झा भी परम प्रसन्न होकर बोले- 'ठीक है। तुम बनाओ। मैं तबतक मिश्र जी की पंचायत से होकर आता हूं।'

मिथिला में काम करते समय महिलाएं गीत गाती रहती हैं। गोनू झा की पत्नी ने भी गीत गाते हुए खूब अच्छे से मछली धोई, काटी, साफ की और उसमें नमक, हल्दी, मिर्च लगाकर छोड़ दिया, ताकि मसाला मछली के अंदर जा सके। फिर वह अंदर से कनकजीर चावल, जो मिथिला का एक बेहतरीन चावल माना जाता है, निकाला और उसे साफ करने लगी। चावल चुनकर, धोकर पकने के लिए चढ़ा दिया।

इधर, दूसरे चूल्हे पर कड़ाही चढ़ाई। कड़ाही जब गरम हो गई, तब उसमें सरसों तेल डाला। तेल गरम हो जाने पर उसमें मछली डालकर तलने लगीं। नमक, हल्दी, मिर्च लगी हुई सारी मछली तल ली गई, तब अलग से तेल गरम कर के उसमें मेथी और लाल मिर्च का फ़ोरन डाला। फिर पीसा हुआ सरसों का मसाला भूनने के लिए डाला। इस मसाले में सरसों के साथ लहसुन, लाल मिर्च, हल्दी, धनिया डालकर पीसा जाता था। मसाला भूनते हुए मछली की मात्रा के अनुसार नमक डाला। मसाला भुन जाने के बाद उसमें पानी डाला। जब पानी में उबाल आने लगा, तब उसमें तली हुई मछली डाल दी। थोड़ी सी खटाई उसने पहले से भिगो के रखी हुई थी। उसे भी मछली में डाल दी। अब आंच धीमी कर दी। धीमी आंच में पकते सरसों के मसाले की सुगंध पूरे घर में फैलने लगी। थोड़ी ही देर में घर कनकजीर चावल के भात और सरसों की मछली की खुशबू से जैसे नहा उठा। इतना बढ़िया खाना बहुत दिनों बाद बना था। गोनू झा की पत्नी प्रसन्नता और बेसब्री से गोनू झा का इंतज़ार करने लगी।

गोनू झा आए। घर में घुसते ही उन्होंने तीन चार लंबी- लंबी सांस ली। पत्नी को लगा कि खाने की सुगंध का असर है। वे बोलीं- ‘आप हाथ पैर धोकर आसन पर बैठिए। मैं तबतक खाना लगाती हूँ।'

गोनू झा हाथ पैर धोकर खाना खाने के लिए बैठे। पत्नी थाली में मछली परोसने लगी। लेकिन इसके पहले कि वे परोसतीं, गोनू झा ने पूछा- 'पहले यह